शिक्षा शास्त्री द्वितीय वर्ष

प्रश्नपत्र – ज्ञान, पाठ्यक्रम एवं मूल्याधारित शिक्षा

प्रकरण – पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं पाठ्येतर क्रियाओं में अन्तर

नियमित कक्षा में इस विषय/प्रकरण पर सम्बन्धित अध्यापकों के अतिरिक्त मेरे द्वारा भी विस्तार से चर्चा की गयी है। कृपया उसका तथा अभी Watsapp group में प्रेषित सामग्री का संज्ञान लिया जाय। आपकी जिज्ञासानुसार संक्षिप्त विवरण प्रेषित है।

पाठ्यक्रम (CURRICULM)

" पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव सम्मिलित हैं जिनको बालक विद्यालय के निर्देशन में प्राप्त करते हैं। इसके अन्तर्गत कक्षा-कक्ष की क्रियाएं तथा उनके बाहर के समस्त कार्य एवं खेल सम्मिलित हैं।" (वाल्टर सी.)

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार – " पाठ्यक्रम का अर्थ केवल शास्त्रीय विषयों से नहीं है जिनको विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाया जाता है, बल्कि इसमें अनुभवों की पूर्णता निहित है जिनको बालक अनेक प्रकार की क्रियाओं द्वारा प्राप्त करता है, जो विद्यालय, कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशाप, खेल के मैदान तथा छात्रों एवं शिक्षकों के बीच होने वाले अनगिनत अनौपचारिक सम्पर्कों में होती रहती है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है जो बालकों के जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श कर सकता है और संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्रदान कर सकता है।"

(पाठ्येतर) पाठ्य सहगामी क्रियाएं (CO-CURRICULAR ACTIVITIES)

पाठ्य सहगामी क्रियाओं से आशय उन क्रियाओं या कार्यक्रमों से है जिन्हें अध्यापकों के मार्गदर्शन में छात्र, विद्यालय अथवा विद्यालय के बाहर भी सम्पादित करते हैं, जिन्हें बालकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना जाता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालक में उन एवं आदतों का विकास कर सकते हैं, जो अच्छे चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक है।

पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं (पाठ्येतर) पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अन्तर

पाठ्यक्रम (CURRICULUM)	पाठ्यचर्या (SYLLABUS)	पाठ्य सहगामी क्रिया CO-CURRICULAR ACTIVITY
1. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न क्रियाएं विभिन्न विषयों के अध्ययन तथा विद्यालय का सम्पूर्ण सामाजिक जीवन और वातावरण आता है।	1. किस कक्षा में कौन से विषय और उन विषयों के अन्तर्गत क्या क्या अध्ययन करना है, इसकी जानकारी प्राप्त होती है।	1. यह सैद्धान्तिक विषयों के अतिरिक्त, छात्रों के व्यक्तित्व-विकास के लिए संरचित विभिन्न क्रियाओं का समूह है। जैसे – खेलकूद, प्रार्थना, भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, सामूहिक, सामुदायिक क्रिया-कलाप इत्यादि।
2. पाठ्यक्रम का क्षेत्र व्यापक है।	2. अपेक्षाकृत संकुचित। यह पाठ्यक्रम के अन्तर्गत ही आता है।	2. यह भी व्यापक पाठ्यक्रम का अंग है।
3. पाठ्यक्रम का सम्बन्ध शिक्षा के एक स्तर/कक्षा की पूरी प्रक्रिया से होता है।	3. इसका सम्बन्ध प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय/प्रश्नपत्र के विवरण से होता है।	3. छात्रों के शारीरिक-मानसिक स्तरानुसार विभिन्न क्रियाओं के आयोजन इसमें शामिल हैं।
4. पाठ्यक्रम छात्र केन्द्रित होता है। अर्थात् किस कक्षा के छात्र के लिए क्या उपयोगी होगा, इसका ध्यान रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।	4. यह विषय केन्द्रित होती है। अर्थात् किस विषय में क्या-क्या अध्ययन बिन्दु/सामग्री होगी इसका विवरण प्राप्त होता है।	4. यह भी छात्र केन्द्रित होती है। सैद्धान्तिक विषयों तथा प्रयोगशाला सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए किस स्तर पर किन किन क्रियाओं का समावेश किया जाना आवश्यक/उचित होगा इसको ध्यान में रखकर ही सहगामी क्रियाओं का संयोजन किया जाता है।

कृपया ध्यान दें — कई पुस्तकों में भिन्न विवरण के कारण — प्रायः पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या को लेकर भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसलिए इसपर किसी भी प्रकार के भ्रम से बचने के लिए हम पाठ्यक्रम को अंग्रेजी के (Curriculum) तथा पाठ्यचर्या को (Syllabus) के रूप में समझने का प्रयास करेंगे। इसी प्रकार पाठ्येतर क्रिया (Extra Curricular Activity) को पाठ्य सहगामी क्रिया (Co-Curricular Activity) कहना/समझना ज्यादा उपयुक्त होगा।

(प्रेम नारायण सिंह)

Scanned by CamScanner